अब घर जाना तो जीते जी मारना
देह अभिमान छोड़, देही- अभिमानी बनना
अच्छे पुरुषार्थी सवेरे-सवेरे उठ याद में रहते
देही- अभिमानी बनने का अभ्यास करते
याद की यात्रा से हिसाब-किताब चुक्तू
होंगे,आशीर्वाद से नही
पावन बनना, ड्रामा को यथार्थ समझना
हर्षित रहना, रोना नही, कर्मयीगी बनना
प्रवृति में रहते.. पर- वृति में रहना
तो न्यारा और बाप का प्यारा बनेँगे
बन्धन नही खेल अनुभव होगा
स्नेह और सहयोग की शक्ति भी साथ हो तो
फिर हाई- जम्प करेंगे
ब्राह्मण जीवन की पर्सनालिटी ...बुद्धि की
महीनता

ॐ शांति !!!
मेरा बाबा!!!